भारत सरकार/Government of India
परमाणु ऊर्जा विभाग/ Department of Atomic Energy
विकिरण एवं आइसोटोप प्रौघोगिकी बोर्ड/ Board of Radiation & Isotope Technology

सत्यमेव जयते

विआप्रौबो/भापअकें वाशी कॉम्प्लेक्स
BRIT/BARC Vashi Complex,
सेक्टर/Sector-20, वाशी/Vashi,
नवी मुंबई/NAVI MUMBAI - 400 703.

विश्व हिंदी दिवस समारोह 2025 - एक रिपोर्ट

परमाणु ऊर्जा विभाग की मुंबई स्थित पाँच इकाइयों (परमाणु ऊर्जा नियामक परिषद; निर्माण, सेवा एवं संपदा प्रबंध निदेशालय; क्रय एवं भंडार निदेशालय; भारी पानी बोर्ड तथा विकिरण एवं आइसोटोप प्रौद्योगिकी बोर्ड) की संयुक्त राजभाषा समन्वय समिति के तत्वावधान में दिनांक 10.01.2024 (शुक्रवार) को सभागृह, नियामक भवन/ए, अणुशक्तिनगर, मुंबई में "विश्व हिंदी दिवस समारोह 2025" का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में विशिष्ट वक्ता के रूप में डॉ. राखी सिंह कटियार, प्रसिद्ध साहित्यकार एवं सचिव, पश्चिमांचल हिंदी प्रचार समिति, वडोदरा को आमंत्रित किया गया था। इस अवसर पर निर्माण, सेवा एवं संपदा प्रबंध निदेशालय; क्रय एवं भंडार निदेशालय; भारी पानी बोर्ड तथा विकिरण एवं आइसोटोप प्रौद्योगिकी बोर्ड इकाइयों के कार्यालय प्रधान भी उपस्थित थे। एईआरबी की ओर से कार्यालय प्रधान के प्रतिनिधि के रूप में श्री ए.पी. गर्ग, निदेशक, नियामक कार्य एवं बाह्य संबंध निदेशालय उपस्थित थे।

मंचासीन अतिथियों द्वारा दीप प्रज्ज्वलन के साथ कार्यक्रम की विधिवत शुरूआत हुई। श्री धनेश परमार, सहायक निदेशक (राभा), एईआरबी ने अपने स्वागत संबोधन के द्वारा कार्यक्रम में आमंत्रित विशिष्ट वक्ता, इकाइयों के कार्यालय प्रधान तथा सभी श्रोताओं का हार्दिक स्वागत किया।

भारतीय संस्कृति की परंपरा को निभाते हुए कार्यक्रम का आरंभ दीप प्रज्जवलन के साथ किया गया। श्रीमती रचना पवार, श्रीमती गौतमी आल्वे, श्रीमती प्रिया परब और कु. गौरी पेंडशे द्वारा समवेत स्वरों में प्रस्तुत सरस्वती वंदना ने समस्त वातावरण को सकारात्मकता से भर दिया।

भापाबो के मुख्य कार्यकारी श्री एस. सत्यकुमार ने अपने व्यक्तव्य में परमाणु ऊर्जा विभाग की सभी यूनिटों द्वारा किए जा रहे राजभाषा नीति एवं नियमों के अनुपालन एवं इसके प्रचार-प्रसार हेतु किए जा रहे प्रयास की सराहना की। उन्होंने वर्तमान समय में राजभाषा, सम्पर्क भाषा और विश्व भाषा के रुप में बढ़ रहे हिंदी के महत्व पर भी अपने विचार व्यक्त किए। उन्होंने यह भी कहा कि हिंदी टेक्नोलॉजी की जरूरत के साथ-साथ सभी तकनीकी गतिविधियों की भी आवश्यकता बनती जा रही है एवं भूमंडलीकरण के दौर में विश्व के लगभग सभी देशों पर अपनी एक अनूठी छाप

छोड़ती हुई हिंदी ने अपनी एक अलग पहचान बना ली है।

श्री के. महापात्रा, निदेशक, निर्माण, सेवा एवं संपदा प्रबंध निदेशालय ने अपने संबोधन में संयुक्त समन्वय समिति द्वारा किए गए विविध कार्यों की सराहना की। साथ ही, उन्होंने हिंदी में कार्य करने के महत्त्व पर प्रकाश डाला और सभी को हिंदी का अधिकाधिक प्रयोग करने के लिए प्रोत्साहित किया। उन्होंने यह भी कहा कि हिंदी में हो रहे आयोजनों ने उन्हें हिंदी में कार्य करने के लिए प्रोत्साहित किया, जिसके परिणामस्वरूप वे किसी भी समारोह में अपना संबोधन हिंदी में ही प्रस्तुत करते हैं।

श्री प्रदीप मुखर्जी, अध्यक्ष एवं मुख्य कार्यकारी, विकिरण एवं आइसोटोप प्रौद्योगिकी बोर्ड ने अपने संबोधन में भारत को संस्कृतियों का घर कहा है। देश में विभिन राज्यों में विभिन भाषाओं को बोलने वाले देशवासी रहते हैं। हालांकि यदि कश्मीर से लेकर कन्याकुमारी एवं असम से लेकर गुजरात तक किसी भाषा का सबसे प्रचलित प्रयोग मिलता है तो वह निसंदेह हिंदी भाषा ही है। देश के प्राचीन इतिहास से लेकर स्वतंत्रता संग्राम एवं आधुनिक समय तक हिंदी ने देश के कोनेकोने से सभी - निवासियों के मध्य सेतु के रूप में कार्य किया है। हमारे देश में 52.83 करोड़ लोगों द्वारा हिंदी बोली जाती है, जो भारत की जनसंख्या का 43.63% है। मंदारिन, स्पैनिश और अंग्रेजी के बाद हिंदी दुनिया में सबसे ज्यादा बोली जाने वाली चौथी भाषा भी है। विश्व के लगभग 137 देशों में हिंदी भाषी तथा हिंदी प्रेमी हैं। मॉरीशस की संसद ने 12 नवंबर 2002 को एक अधिनियम के द्वारा विश्व हिंदी सचिवालय की स्थापना की। इसके मदों में से हिंदी को संयुक्त राष्ट्र संघ की अधिकृत भाषा बनाने का एक उद्देश्य पूरा हो चुका है।

श्री वेद सिंह, निदेशक, क्रय एवं भंडार निदेशालय ने अपने संबोधन में कहा कि निदेशक, क्रभंनि, मुंबई ने सभा को संबोधित करते हुए कहा कि हिंदी सिर्फ एक भाषा नहीं है, बल्कि हमारी राजभाषा के साथ-साथ ये हमारी सांस्कृतिक धरोहर, हमारे रीति रिवाज और हम सबको एक सूत्र में बांधने का भी काम करती है। हालांकि उन्होंने इस बात पर भी जोर दिया कि यह नहीं समझा जाना चाहिए कि हमारी दूसरी प्रादेशिक भाषाएं किसी तरह से कमतर हैं, वो सब भी उतनी ही अच्छी है और उन सब भाषाओं की भी अनेकों विशेषताएं है। ये सब भाषाएं हमारे संस्कृति और सभ्यता की धरोहर है लेकिन हिंदी एक ऐसी भाषा है जिसको सब लोगों तक पहुंचाना अधिक सरल है। हिंदी भाषा आज अनेक क्षेत्रों में प्रयोग मे लाई जा रही है। इसके अलावा व्यावहारिक तौर भी अभी बहुत सारी जगह पर कमियाँ हैं जो हम सब को मिलकर दूर करनी पड़ेगी; जैसे कि हम इसे विशेष अवसरों पर बोलने से हिचकिचाते हैं। हिंदी दरअसल हमारी कमजोरी नहीं बल्कि शक्ति है। अपनी भाषा में बात करना गर्व की बात होनी चाहिए। आज तेजी से बदलती परिस्थिति में हिंदी के प्रयोग को और भी प्रभावशाली और स्वीकार्य करना पड़ेगा। चाहे वो तकनीक का क्षेत्र हो या फिर आर्थिक- हर क्षेत्र में इसका विस्तार करना होगा।

श्री ए.पी. गर्ग, निदेशक, नियामक कार्य एवं बाह्य संबंध निदेशालय, परमाणु ऊर्जा नियामक परिषद ने सभी इकाई प्रमुखों, विशिष्ट वक्ता तथा उपस्थित श्रोताजनों का स्वागत किया और अपने संबोधन में कहा कि सरकारी कार्यालयों में भी राजभाषा के प्रयोग को बढ़ाने के लिए उत्साहवर्धक वातावरण का निर्माण करने के उद्देश्य से विश्व हिंदी दिवस का आयोजन किया जाता है ताकि कर्मचारी राजभाषा में कार्य कर अपने को गौरवान्वित समझे एवं हिंदी के प्रति सांविधिक एवं संवैधानिक दायित्व का स्मरण कराते हुए अधिकारियों एवं कर्मचारियों को अधिक से अधिक सरकारी कार्य करने के लिए प्रेरित एवं प्रोत्साहित किया जा सके एवं विश्वमंच पर हिंदी को सम्मानित स्थान

दिला सके। राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर हिंदी का व्यापक प्रचार प्रसार सभी के सहयोग से ही संभव हो सकता है ऐसा मुझे विश्वास है।

विशिष्ट वक्ता के रूप में डॉ. राखी सिंह कटियार ने अंतरराष्ट्रीय स्तर पर हिंदी भाषा के उत्थान की बचात करते हुए हिंदी काव्यधारा की अलग-अलग विधाओं को अपनी कविताओं, गीतों एवं साहित्यिक रचनाओं के द्वारा पूरे सभागार को अपने साहित्य एवं संगीत की स्वर लहरी से गुंजित कर दिया।

श्री ए.पी. गर्ग, निदेशक द्वारा मुख्य वक्ता डॉ. राखी सिंह कटियार जी का शॉल और श्रीफल से सम्मान किया गया। मंचासीन अतिथियों तथा के हिंदी पदाधिकारियों को समन्वय समिति की ओर से चिह्न प्रदान किए गए। श्री मुख्य प्रशासन अधिकारी द्वारा निदेशक, एईआरबी को स्मृति किया गया।

इसके पश्चात पांचों इकाइयों संयुक्त राजभाषा भेंट स्वरूप स्मृति एस.ए. मेश्राम, श्री ए.पी. गर्ग, चिह्न प्रदान

इस पूरे कार्यक्रम का संचालन श्री धनेश परमार, सहायक निदेशक (राजभाषा), परमाणु ऊर्जा नियामक परिषद द्वारा किया गया। मुख्य वक्ता का परिचय श्रीमती अनुराधा दोडके, उप निदेशक (राजभाषा), निसेसंप्रनि द्वारा प्रस्तुत किया गया। अंत में श्रीमती विद्याश्री, सहायक निदेशक (राजभाषा), ब्रिट द्वारा सभी को धन्यवाद ज्ञापन के पश्चात राष्ट्रगान के साथ कार्यक्रम का समापन किया गया।

******